पाठ योजना

सूचनात्मक पक्ष :—

विद्यालय का नाम : टी. भी. एस., उ. वि., जगन्नाथपुर, धुर्वा।
दिनांक : 26-10-19
कक्षा : नवम्
विषय : संस्कृत
उपविषय : काव्य (पद्य)
प्रकरण : जटायो: शौर्यम्
कालांश : तृतीय
समयावधि : 45 मिनट
छात्राध्यापिका का नाम : शगिनी गोस्वामी
परीक्षा क्रमांक : 18ED751282

ज्ञानात्मक पक्ष :—

सामान्य उद्देश्य : 1. संस्कृत कविता के प्रति छात्रों में सामान्य अनुराग उत्पन्न करना।
2. गति, लय, यति एवं भाव के अनुसार श्लोक पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।
3. कविता के मुख्य भावों को ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करना।
4. छात्रों के भावों का परिष्कार करते हुए उनमें उदात्त भावों का विकास करना।
5. कविता के अन्तर्गत शब्द-योजना के आधार पर दृश्य-चित्रों की उद्भावना करना।
6. काव्यगत सौन्दर्य अनुभूति करने की क्षमता प्रदान करना।
7. छात्रों को कविता की विभिन्न

Scanned with CamScanner

शैलियों से परिचित कराना।
7. संस्कृत कविता का रसास्वादन करके अपने शब्दों में उसकी व्याख्या करने की क्षमता प्रदान करना।

विशिष्ट उद्देश्य : 1. छात्रों को आदिकवि वाल्मीकि कृत 'रामायण' काव्य से अवगत कराना।
2. छात्रों को रामायण के मुख्य पात्रों से अवगत कराना।
3. छात्रों को जटायु (पक्षी) द्वारा किए गए मदद या उपकार की शिक्षा प्रदान करना।

शिक्षण सहायक सामग्री : 1. चार्ट-पेपर।
2. मॉडल।
3. लैपेट-फलक।
4. संकेतक।

शिक्षण-विधि : 1. व्याख्या विधि एवं ~~समन्वय~~ खण्डान्वय
2. प्रदर्शनविधि।
3. भाष्यविधि।

पूर्वज्ञान : छात्र जटायो: शौर्यम्' के माध्यम से रामायण की कथा से पूर्व-रूप से परिचित हैं।

प्रस्तावना :—

क्रम सं.	प्रस्तावना के प्रश्न	छात्र संभावित उत्तर
01.	वाल्मीकि द्वारा रचित काव्य का नाम बताएँ?	रामायण।
02.	रामायण ग्रन्थ के प्रमुख पात्रों का नाम बताएँ?	राम, सीता तथा रावण।
03.	सीता को हरण करने वाले व्यक्ति का नाम क्या था?	रावण।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य कथन : छात्रों आज हमलोग 'जटायो : शौर्यम्' के अन्तर्गत रावण की नीच बुद्धि के संबंध में अध्ययन करेंगें।

क्रियात्मक पक्ष : —
प्रस्तुतीकरण —

शिक्षण - बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाशीलन	छात्र क्रियाशीलन	श्यामपट्ट कार्य
श्लोक	निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्। न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥5॥		उत्तर : — जटायु: रावणं कथयति यत् नीचां मतिं परदाराभिमर्शनात् निवर्तय। धीर: तत् न समाचरेत् यत् पर: विगर्हयेत्।
आदर्श - वाचन	छात्राध्यापिका स्वर का उतार - चढ़ाव करते हुए तन्मयता के साथ आदर्श - वाचन करेंगी।	सभी छात्र ध्यान-पूर्वक सुनेंगें।	
अनुकरण - वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण - वाचन करने को कहेंगी।	छात्र अनुकरण - वाचन करेंगें।	
व्याख्या	(हे रावण !) अपनी नीच बुद्धि को पराची स्त्री के स्पर्श से हटा लो। धैर्यशाली उस कार्य को न करें, इस (मनुष्य) के जिस कार्य की दूसरा निन्दा करें।		उत्तर : — क्रोधवशात् रावण : तलेन (तलवारेण) जटायुं हन्तुम् उद्यत: अभवत्।
~~मौन~~ सस्वर - वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को ~~मौन~~ सस्वर - वाचन करने को कहेंगी।	छात्र मौन - वाचन करेंगें।	सन्धि विच्छेद : — 1) स्वग + उत्तम : । 2) "तत्समाचरेद्धीर : = तत् + सम् + आचरेत् + धीर : ।
विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न	छात्राध्यापिका छात्रों से विचार विश्लेष - णात्मक प्रश्न पूछेंगी। प्रश्न : — जटायु: रावणं किं कथयति ? प्रश्न : — क्रोधवशात् रावण: किं कर्तुम् उद्यत : अभवत् ? प्रश्न : — सन्धिं छत्वा लिखत : — स्वगोत्तम ।	छात्र उत्तर देंगें।	

शिक्षण-बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाशीलन	छात्र क्रियाशीलन	श्यामपट्ट कार्य
श्लोक	वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथ: कवची शरी। न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे- गमिष्यसि ॥6		
आदर्श-वाचन	छात्राध्यापिका स्वर का उतार-चढ़ाव करते हुए तन्मयता के साथ आदर्श-वाचन करेंगी।	सभी छात्र ध्यान-पूर्वक सुनेंगे।	पर्यायपदं 1) भुवि = पृथिव्याम् । 2) पपात = अपतत् । 3) पतगसत्तम: = पक्षिश्रेष्ठ: । 4) आशु = शीघ्रम् । काठिन्य-निवारणम् :— 1) धन्वी = धनुषधारी । 2) कवची = कवच धारण किए हुए । 3) वैदेहीम् = सीता को । 4) विगर्हयेत् = निन्दा करनी चाहिए । 5) मतिम् = बुद्धि को ।
अनुकरण-वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण-वाचन करने को कहेंगी।	छात्र अनुकरण-वाचन करेंगे।	
व्याख्या	(हे राक्षसराज रावण!) मैं बूढ़ा हूँ और तुम युवक, धनुष धारण किए हुए, रथ पर सवार, कवच धारण किए हुए और बाण भी लिए हो। परन्तु मेरे कुशल रहते हुए विदेहराज-पुत्री सीता को लेकर नहीं जा पाओगे।		
~~मौन~~ सस्वर-वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को ~~मौन~~ सस्वर-वाचन करने को कहेंगी।	छात्र मौन-वाचन करेंगे।	
विचारविश्लेषणात्मक प्रश्न	छात्राध्यापिका छात्रों से विचारविश्लेषणात्मक प्रश्न पूछेंगी। प्रश्न :— पर्याया: पदं लिखत :— (i) भुवि (2) पपात (3) पतगसत्तम: (4) विरथ: पृथिव्याम् (5) आशु	छात्र उत्तर देंगे।	

पुनरावृत्ति के प्रश्न :—

1) जटायु : रावणं किं कथयति ?
2) क्रोधवशात् रावण : किं कर्तुम् उद्यत : अभवत् ?
3) सन्धिं कृत्वा लिखत :—
(i) खगोत्तम : ।
4) पर्याया : पदं लिखत :—
(i) भुवि (2) पपात
(3) विरथ : पृथिव्याम् (4) पतगसत्तम :
(5) आशु

गृहकार्य :—

1) संस्कृत वाक्यानि रचयत :—
(i) शुभाम्
(2) हतसारथि :
(3) कवची
(4) बाणेन

Scanned with CamScanner